पत्र सूचना शाखा
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0

पश्चिम बंगाल के राज्यपाल की कविता पर आधारित नृत्य नाटिका का मंचन
केशरी नाथ त्रिपाठी एक सफल अधिवक्ता, संसदीय परम्परा के ज्ञाता के साथ लोकप्रिय कवि भी हैं - श्री नाईक

लखनऊः 30 मार्च, 2018

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री राम नाईक ने राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह में संस्था दृश्य भारती द्वारा पश्चिम बंगाल के राज्यपाल श्री केशरी नाथ त्रिपाठी के काव्य संग्रह 'मनोनुकृति' पर आधारित नृत्य नाटिका के मंचन का शुभारम्भ किया। कार्यक्रम में राज्यपाल ने संस्था की ओर से डा॰ हरि प्रसाद दुबे को साहित्य, नवाब मसूद अब्दुल्ला को लखनवी संस्कृति और कला के उन्नयन, सैय्यद मीसम अली को समाज सेवा, पुलिस अधिकारी सुनीता सिंह को कर्तव्यपरायणता, डा॰ नीरा दीक्षित को कथक नृत्य, करिश्मा जायसवाल को समाज सेवा तथा कीर्ति उपाध्याय को महिला स्वालम्बन जागरूकता के लिए स्मृति चिन्ह, अंग वस्त्र व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर नवाब मीर अब्दुल्ला जाफर, श्री अतहर नबी, कार्यक्रम के निर्देशक श्री आनन्द शर्मा, संस्था के महासचिव श्री प्रेमशंकर भारती सहित बड़ी संख्या में कला प्रेमी उपस्थित थे।

राज्यपाल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि इस कार्यक्रम में पश्चिम बंगाल के राज्यपाल श्री केशरी नाथ त्रिपाठी को आना था पर किसी कारण से नहीं आ सके हैं। उत्तर प्रदेश का राज्यपाल बनने से पूर्व मैं उन्हें सफल अधिवक्ता, संसदीय परम्परा के ज्ञाता एवं सफल राजनीतिज्ञ के रूप में जानता था। वे भी उत्तर प्रदेश से भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष थे और मैं मुंबई शहर का अध्यक्ष। विधान सभा अध्यक्ष के नाते उनकी सेवाएं सराहनीय रही हैं। राज्यपाल बनने के बाद दोनों लोग राजनीति या पार्टी में नहीं हैं बल्कि हमारा संबंध राज्यपाल का है। श्री केशरी नाथ त्रिपाठी मुझसे लखनऊ में मिले और अपनी कविताओं का संग्रह भेंट किया तो पता चला कि वे एक अत्यन्त लोकप्रिय कवि भी हैं। उनकी कवितायें हृदय छू लेने वाली हैं।

श्री नाईक ने संस्था के 25 वर्ष पूर्ण होने पर सभी पदाधिकारियों को बधाई दी। राज्यपाल ने जीवन में सफलता प्राप्ति के लिये 'चरैवेति! चरैवेति!!' का मर्म समझाते हुए कहा कि निरन्तर चलते रहने से सफलता मिलती है। उन्होंने सभी कलाकारों का अभिनन्दन किया तथा नृत्य नाटिका का अवलोकन भी किया।

कार्यक्रम में संस्था के महासचिव ने स्वागत उद्बोधन दिया तथा नवाब मीर अब्दुल्ला जाफर ने सभी अतिथियों का स्वागत पुष्प गुच्छ भेंट कर किया।

अंजुम/ललित/राजभवन (128/44)